“।। आप सुखी तो जग सुखी, आप दुखी तो जग दुखी।।”

पूज्य महापुरूषों से विनम्र प्रार्थना

मेरे सभी पूज्य पण्डित,पुरोहित,गुरू,पीर,सन्त,वली,मुल्ला,पादरी आदि महापुरूष सज्जन आप सब धन्य हैं जो मानवता को अपने ज्ञान से सुख–शान्ति दे रहे हैं। मै भी इसी तरह का ज्ञान देने वाला आपका ही एक भाई हूं। मै लगभग १९६० से यह सत्संग का काम करा रहा हूं। परन्तु मेरा यह पेशा नहीं है। मैंने भारतीय सेना में अधिकारी पद सेवा की है और इस अध्यात्म विषय में यानी आत्मा–परमात्मा की खोज या ज्ञान प्राप्त करने में मेरी रूचि रही है। और इसी रूचि या इच्छा के कारण मुझे सहज में इस तत्व ज्ञान की प्राप्ति हुई जिसके अनुभव के आधार पर मैं अपने आन्तरिक भाव व्यक्त करना चाहता हूं।

अपने प्यारे शंकराचार्यों मुनियों व आश्रम वाले सन्त महापुरूषों की बातें आए दिन समाचार पत्रों में पढते रहने से मैं अपने विचारों के स्तर पर आने को मजबूर हूं और अपने प्यारे पूज्य महापुरूषों से कुछ निवेदन करना चाहता हूं। मेरा पहला निवेदन तो यही है कि मानवता के मार्गदर्शन का व सत्संग देने का कार्य वही सज्जन करें जो काम,क्रोध, लोभ, मोंह,अहंकार,आदि के विचारों से उपर प्रकाश व बुध्दि व समझ–बुझ से सत्संग देते हैं तो वे काम,क्रोध आदि विकारों से बच नहीं सकते। इसका कारण यह है कि मानव शंरीर एक रेडियो स्टेशन है। जो जैसा होता है,उसके अन्दर से वैसी ही धारा निकलती रहती हैं। अतः जब गुरू की रेडियेशन या विकिरण धारा से शिष्यों को लाभ हो सकता है तो शिष्यों की काम,क्रोध इत्यादि की विकिरण धारा आप पर प्रभाव डालेगी और आप नीचे गिर जायेंगे। अतः आप सभी सज्जन पहले खुद साधन–सम्पन्न बने फिर दूसरों को ज्ञान दें तो आपका भी और आपके अनुयायियों का भी कल्याण होगा। गुरू गद्यी पर बैठने से न तो आपका कल्याण होगा और न आपके शिष्यों के जिन महापुरूषों ने अपने निजी स्वार्थ मान–सम्मान या पन्थ के लिए गुरूआई की है तो ऐसे महापुरूषों के अन्दर से सत्यता शान्ति की रेडियेशन नहीं निकल सकती और ये महापुरूष अन्तिम पद तक नहीं पहुंच सकते। इसलिए बार–बार कहा जाता है कि:–